August - 2021

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFEREED & INDEXED JOURNAL

SPECIAL ISSUE - 271

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना

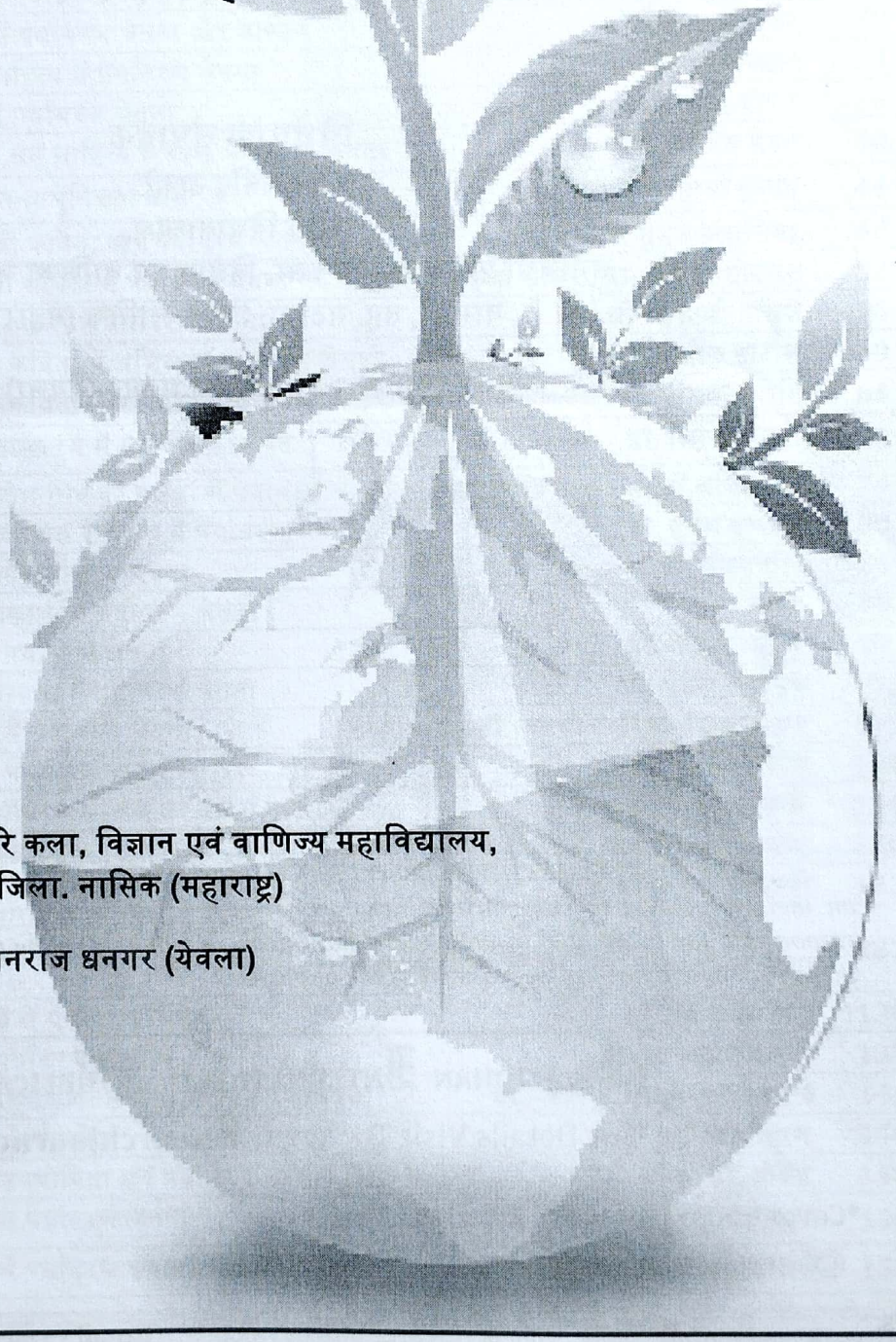

विशेषांक संपादक

प्रा. रवींद्र ठाकरे

हिंदी विभागाध्यक्ष,

समाजश्री प्रशांदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

नामपूर, तह. सटाणा, जिला. नासिक (महाराष्ट्र)

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर (येवला)

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

अ.नं.	शीर्षक	लेखक /लेखिका	पृ. क्र.
☼	संपादकीय	प्रा. रवींद्र ठाकरे	06
1	समकालीन हिंदी काव्य साहित्य में जल पर्यावरण-चेतना	डॉ.बृजेश सिंह	08
2	राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह की गज़लों में जल- पर्यावरण संरक्षण	प्रो. डॉ. अनिता नेरे, डॉ. योगिता हिरे	12
3	डॉ. शंभुनाथ सिंह की 'पेड़ की पुकार' कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. जिभाऊ मोरे	17
4	बिन पानी सब सून	डॉ. बालकवि सुरंजे, ज्योति बी. थोरात	20
5	अशोक जमनानी के 'स्वेटर'कहानी संग्रह में पर्यावरण चेतना	डॉ. संदीप देवरे	23
6	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. वाल्मीक सूर्यवंशी	26
7	हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना और वास्तव	डॉ. सजित खांडेकर	29
8	हिंदी कहानी साहित्य में पर्यावरण चेतना	प्रा. कैलास बच्छाव	33
9	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. पूनम बोरसे	36
10	हिंदी-मराठी के संत साहित्य में व्यक्त पर्यावरण-चेतना	डॉ. दत्तात्रेय येडले	40
11	पर्यावरण चेतना आधुनिकता बोध	डॉ. पुष्पा पुष्पध	44
12	समकालीन हिंदी कविता और पर्यावरण चेतना	डॉ. सुमन पलासिया	48
13	हिंदी आदिवासी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. शशिकला सालुंके, प्रा. सविता तोडमल	52
14	बृजेश सिंह की गजलों में पर्यावरण चेतना	श्री भिकाजी कांबले	56
15	आधुनिक हिंदी कविता में अभिव्यक्त पर्यावरण चेतना	श्री अशोक पाटील	60
16	आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	श्रीमती ज्योति	64
17	पर्यावरण चेतना के रंग में सराबोर कवि पंत	प्रा. स्मिता मिस्त्री	70
18	राष्ट्रकवि डॉ.बृजेश सिंह की गज़लों में पर्यावरण चेतना	प्रा. रवींद्र ठाकरे, प्रो.डॉ.अनिता नेरे	74
19	कवि सुमित्रानंदन पंत के काव्य में पर्यावरण चेतना	प्रा. हर्षल बच्छाव	80
20	हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. संजय धोटे	84
21	कामायनी महाकाव्य में पर्यावरण चेतना	हंसा बागरे	90
22	हिंदी काव्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. नज़मा मलिक	97
23	कुइयांजान उपन्यास में पर्यावरण चेतना	प्रा. युवराज गातवे	102
24	हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना	प्रो. डॉ. जयश्री गावित, वंदना जाधव	105
25	हिंदी काव्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. सुनिल पाटील	108
26	मीठी नीम: पर्यावरण संरक्षण का आदर्श पाठ	डॉ. मीना सुतवणी	114
27	उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में पर्यावरण चेतना	श्रीमती शबीना नाज	120
28	पर्यावरण के प्रहरी संत कवि	काग चांगाभाई मगनाजी	123
29	कवि सुमित्रानंदन पंत प्रकृति और वैश्विक महामारी	दिलीपकुमार गावित, डॉ. जशवंतभाई पंड्या	127
30	बाल कविताओं में पर्यावरण चिंतन	डॉ. गणेश शेकोकर	130
31	कामायनी में पर्यावरण चेतना	प्रा. शांताराम वलवी	137
32	विनोद चन्द्र पाण्डेय की कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. मनोहर माधवराव जगधाडे	142
33	तालाब हमारे प्रेरणाश्रोत	डॉ. सुनिल चव्हाण	144
34	पर्यावरण की उपयोगिता एवं पर्यावरण संरक्षण : एक अध्ययन	डॉ. गीता, डॉ. ओकेंद्र	148
35	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. भरत शेणकर	156
36	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. मिनल बर्वे	159

Scanned with OKEN Scanner

37	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. जयश्री किनारीवाल-कुमावत	162
38	हिंदी काव्य में पर्यावरण चेतना	प्रा. निलेश पाटील	165
39	'भगत की गत' कहानी में अभिव्यक्त ध्वनि प्रदूषण की समस्या	डॉ. नानासाहेब जावले	169
40	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. योगिता घुमरे	171
41	ग्रामीण महिलाओं में पर्यावरण चेतना	डॉ. डी. बी. महाजन	174
42	डॉ.श्रीराम परिहार के 'पानी है अनमोल' निबंध में चित्रित पर्यावरण चेतना	डॉ. बाबासाहेब भुजाडे	177
43	हिंदी और गुजराती कविताओं में प्रकृति निरूपण	डॉ. मनीष पटेल	181
44	निर्मला पुतुल की कविताओं में पर्यावरण चेतना	डॉ. बबन थोरात	184
45	सूरसागर के बाललीला चित्रण में पर्यावरण चेतना	स्वाती ठकार	189
46	अज्ञेय के काव्य में पर्यावरण चेतना	प्रा. राजेंद्र जाधव	194
47	दिनकर की 'उर्वशी'और पर्यावरण प्रकृति	डॉ. राजेंद्र कुमार चौधरी	198
48	हिंदी निबंधों में पर्यावरण चेतना	प्रा. अभिषेक कुमार पाण्डेय	201
49	हिंदी काव्य और पर्यावरण के समसामायिक संदर्भ	डॉ. अनिता वेताल	208
50	पर्यावरण की अवधारणा और तुलसीदास	डॉ. उमाकांत सालवकर	210
51	हिंदी लघुकथा में पर्यावरण चेतना	डॉ. मनोहर जमदाडे	215
52	पर्यावरण विमर्श विशेष संदर्भ 'विलुप्त होते जलाशय'	प्रा. नीहारिका देशमुख	218
53	हिंदी कविता में पर्यावरण जनजागृति	डॉ. विजयप्रकाश शर्मा	224
54	विभा रानी के संगीत नाटक 'पीर पराई' में सांस्कृतिक तथा सामाजिक पर्यावरण	स्वाती खलेकर	228
55	हिंदी गज़ल में पर्यावरण चेतना	प्रो. डॉ. जालिन्दर इंगले, प्रा. स्वप्ना बेंडकुले	232
56	अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानी में पर्यावरण चेतना	प्रा. मोहिद्दीन बाषा	237
57	पर्यावरण चेतना आधुनिकता बोध	प्रा. दिनेश अहिरे	239
58	साहित्य और पर्यावरण	डॉ. नितिन दत्तात्रेय पंडीत	242
59	'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में पर्यावरण चिंतन	डॉ. गेलजी भाई भाटिया	247
60	मानव, प्रकृति और साहित्य	डॉ. मुकेश वसावा	249
61	आधुनिक हिंदी महाकाव्य में पर्यावरण चेतना	प्रा. संतोष पगार, प्रा.राकेश वलवी	253
62	'हिमालय 'पर्यावरण चेतना का स्रोत	डॉ. ममता नानकचंद पंजाबी	256
63	समकालीन हिंदी कविताओं में पर्यावरण तथा सामाजिक चिंतन	डॉ. मनीषा मुगलिकर	261
64	छायावादी काव्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. यशोदा मेहरा	265
65	समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. विष्णु राठोड	270
66	पर्यावरण और छायावाद युगीन काव्य में अंत:संबंध	प्रो. डॉ. अनिता नेरे, प्रा. अनिता राजबंशी	275
67	हिंदी कहानी साहित्य में पर्यावरण संरक्षण	प्रा. राकेश वलवी, प्रा. संतोष पगार	278
68	बालसाहित्य में वन्यजीव वर्णन और पर्यावरण प्रदूषण	मोहनलाल वासवा	281
69	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	सत्य नारायण प्रसाद	288
70	पर्यावरण चेतना और आधुनिक बोध	डॉ. संजय दवंगे	294
71	गीतांजलि श्री की कहानियों में पर्यावरण चेतना	प्रा. उज्वला अहिरे	296
72	पर्यावरण संरक्षण और मानव चेतना	डॉ. ओकेंन्द्र, डॉ. गीता	300
73	सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में प्राकृतिक चेतना	डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी	305
74	पर्यावरण चेतना आधुनिक बोध (उपन्यासों में प्रकृति, प्राकृतिक एहसास और प्राकृतिक मूल्य चेतना)	प्रा. शाहू मधाळे	308

Scanned with OKEN Scanner

हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना

डॉ. योगिता दत्तात्रय घुमरे
महिलारत्न पुष्पाताई हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महिला महाविद्यालय,
मालेगांव कैंप,मालेगांव, नाशिक
मोबाइल नं 9922135735
ghumareyogita@yahoo.in

विश्व की निर्मिती ही पर्यावरण से हुई है| पर्यावरण सृष्टि का अविभाज्य भाग है| प्रकृति अपने आप में सुन्दर है और मानव स्वभाव से ही सौन्दर्य प्रेमी माना गया है| इसी कारण प्रकृति और मानव का सम्बन्ध उतना ही पुराना माना गया है, जितना की इस सृष्टि के आरम्भ का इतिहास| ऐसा माना जाता है की मानव- सृष्टि की उत्पति ही प्रकृति से हुई है| पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, अग्नी इन पांच तत्वों से सृष्टि का विकास एवं उत्पति मानी जाती है| प्रकृति के यही पांच अंग व्यक्ति को सर्जना की प्रेरणा देते है| प्राचीन काल से आज तक प्रकृति के इन पांच तत्वों को देवत्व का रूप प्रदान किया गया है| तात्पर्य यह है की प्रकृति और मानव जीवन का सम्बन्ध अनादि चिरंतन और शाश्वत है|

प्रकृति के यही अनेक रूप साहित्यकारों को लेखन की प्रेरणा देते आये है| प्रकृति के कोमलकांत स्वरुप को साहित्य में सदा स्थान प्राप्त हुआ| वैदिक साहित्य में प्रकृति को दैवी स्वरुप प्रदान किया, वही परवर्ती साहित्यकारों ने उसे माँ, प्रेमिका, पथप्रदर्शिका, उपदेशिका आदि कितने नामो से देखा और चित्रित किया| संस्कृत या वैदिक साहित्य में पर्यावरण चित्रण को एक अलग स्थान था| इस साहित्य का एक भी ऐसा कवी नहीं जिसका मन-हृदय प्रकृति चित्रण में रमा नहीं| कालिदास का 'मेघदूत' प्रकृति-चित्रण की एक बेजोड़ कृति है| बाणभट्ट की 'कादम्बरी' यह रचना भी उदात्त प्रकृति का चित्रण कराती हुई दिखाई देती है|

जब हम हिंदी साहित्य के आदिकाल की बात करे तो साहित्य में प्रकृति वर्णन कुछ विलुप्त सा होता दिखाई पड़ता है| कविगण प्रकृति का आश्रय केवल आलंबन या उद्दीपन के लिए ही लेते हुए दिखाई पड़ते है, लेकिन फिर भी महाकाव्यों में प्रकृति चित्रण होता ही रहा था| आदिकाल में रचे 'पृथ्वीराज रासो' में, पर्यावरण चित्रण का एक उदाहरण देखिए, 'मानहुं कला ससिभान कला सोलह सों बन्निय| बाल बैस ससि ता समीप अम्रित रस पिन्निय'| इसी काल में रची विद्यापति की रचनाओं में आलम्बन उद्दीपन के रूप में प्रकृति चित्रण मिल जाता है| विद्यापति रचित पदावली प्रकृति वर्णन की दृष्टि से अनुपम है- "मौली रसाल मुकुल भेल ताब, समुखहिं कोकिल पंचम गाय"| भक्तिकाल के साहित्य में कबीर, जायसी, सुर और तुलसीदास के काव्यों में प्रकृति चित्रण के दर्शन दिखाई देते है| तुलसी के 'रामचरितमानस' में सीता हरण के बाद प्रभु श्रीराम के मुख से यह सुनने को मिलता है, "हे खग-मृग है मधुकर स्रेनी, तुम देखी सीता मृगनैनी"| इतना ही नहीं उमड़ते हुए बादलों को देख राम लक्ष्मण से कहते है-

"घन घमंड गरजत नभ घोरा, प्रियाहीन मन डरपत मोरा"| सीता और लक्ष्मण को वृक्षारोपण करते हुए दिखाया है-

"तुलसी तरुवर विविध सुहाए, कहूं कहूं सिया कंहू लखन लगाएं"|

जायसी के 'पद्मावत' में भी रानी नागमती की विरह दशा को बारहमासा के द्वारा स्पष्ट किया है| विरह दशा में रानी नागमती पीड़ित है और कहती है- "आधी रात पपीहा बोला"| इस प्रकार प्रकृति मानव जीवन के सुख दुःख की सहचरनी है| इस प्रकार सूर, तुलसी, मीरा, रसखान आदि भक्त कवियों ने प्रकृति के अपार व मोहक चित्र चित्रित किये है|

रीतिकालीन कवियों में रहीम, बिहारी, पद्माकर, देव, सेनापति, रैदास आदि ने प्रकृति के सौन्दर्य को देखा प्राकृतिक छठाओं को अलंकारिक रूप प्रदान किया और अपनी रचनाओं में स्थान दिया| बिहारी का एक दोहा स्पष्ट है-

'पावस-घन-अंधियारि में रह्यों भेद नहिं आन| रति द्योंस जान्यों परै लखि चकई चकवान||

भाव यह है की वर्षा काल के बादलों के कारण पृथ्वी पर इतना अंधकार छा गया है कि रात और दिन का भेद नहीं जान पड़ता, केवल चकवा और चकई को देखकर ही रात-दिन का अंतर जाना जा सकता है|

Scanned with OKEN Scanner

सेनापति, बिहारी के काव्यों में प्रकृति का सटीक चित्रण हुआ है, जिसे देखकर यह स्वीकार करना पड़ेगा की उन्होंने प्रकृति का सूक्ष्म निरिक्षण किया था| उद्दीपन विभाव के रूप में बिहारी का एक ओर प्रकृति चित्र देखिए-

"सघन कुंज छाया सुखद, शीतल सुरभी समीर|
मन हये जात अजी वहै, उहि जमुना के तीर||"

कवि सेनापति ने भी प्रकृति चित्रण का आलंबन भाव अभिव्यक्त किया है, उनके काव्य की एक झलक इस प्रकार है- वृष कौ तरनि तेज सहसौं किरन करि,

"ज्वालन के जाल विकराल बरसत हैं|
तपति धरनी, जग जरत झरनी, सीरी,
छांह को पकरि पंथ पंछी विरमत हैं||
सेनापति नेक दुपहरी के ढरत होत,
धमका विषम, ज्यों न पात खरकत
मेरे जान पौनों सीरी ठोर को पकरि कौनों,
धरी एक बैठी कहूँ घामे बितवत हैं|"

इस प्रकार उद्दीपन और आलंबन रूप में प्रकृति चित्रण कवियों द्वारा हुआ है|

छायावादी काव्य में प्रकृति का सूक्ष्म और उत्कट रूप दिखाई देता है, महादेवी वर्मा, निराला, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पन्त इनके काव्यों में पर्यावरण चेतना यत्र-तत्र दिखाई देती है| पन्त को तो प्रकृति का सुकुमार कवि भी कहा गया है| पन्त जी की 'ग्राम' इस कविता की कुछ पंक्तियाँ इसप्रकार है-

'यह रवि शशि का लोक, जहाँ हँसतें समूह में उड़गण,
जहां चहकते विहाग, बदलते क्षण क्षण विद्युत् प्रभ घन|
यहाँ वनस्पति रहते, रहती खेतों की हरियाली,
यहाँ फुल हैं, यहाँ ओस, कोकिला, आम की डाली'|

प्रसाद की कामायनी में भी पर्यावरण दिखाई देता है, यह छायावादी युग का श्रेष्ठतम काव्य है| जिसके आलंभ में ही प्रकृति का भयान रूप स्पष्ट होता है उसका एक उदाहरण-

"हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर
एक बैठ शिला की शीतल छांह,
एक पुरुष भीगे नयनों से
देख रखा था प्रलय प्रवाह"|

प्रसाद ने प्रकृति को ही सौन्दर्य और सौन्दर्य को ही प्रकृति माना है|

इस प्रकार छायावादी कवियों ने प्रकृति को अपनी रचनाओं का विषय बनाया और पर्यावरण को काव्य रचना में यथोचित अपनाया| प्रकृति सौन्दर्य को मैथिलीशरण गुप्त जी ने 'साकेत', 'पंचवटी', 'यशोधरा', 'सिद्धराज' आदि ग्रंथों में सुंदर चित्रण किया है| यथा-

"चारु चन्द्र की चंचल किरणे खेल रही हैं जल थल में,
स्वच्छ चांदनी बिछी हुई है अवनी और अम्बरतल में|

छायावादी काव्य शैली में प्रकृति का सूक्ष्म और उत्कट रूप दिखाई देता है| पन्त, निराला, प्रसाद इन कवियों ने प्रकृति की भव्यता को स्वीकार किया और अपनी कविताओं में चित्रित किया| प्रकृति में यह कवि इतने रममान हो जाते है की प्रकृति में ही अपनी प्रेमिका को देखते है|

प्रगतिवादी कवि नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, रांगेय राघव, मुक्तिबोध आदियों ने अपनी कविताओ में पर्यावरण चेतना को उजागर किया है| 'अकाल और उसके बाद' कविता में कवि नागार्जुन जी ने समय की दशा का चित्रण किया है-

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त|"

Scanned with OKEN Scanner

परिणामत: कविता द्वारा स्पष्ट होता है की मानव ने पर्यावरण में छेड़छाड़ कर उसके संतुलन को बिगाड़ दिया है, और इसी कारणवश मानव को अकाल, बाढ़, आदि प्राकृतिक त्रासदियों का सामना करना पड़ रहा है| नागार्जुन के 'सतरंगे पंखो वाली' इस काव्य संग्रह की अनेक कविताएं पर्यावरण चेतना का बोध कराती है|

केदारनाथ सिंह की कविताओं में भी प्रकृति में मानव हस्तक्षेप के कारण हो रहे विनाश को स्पष्ट किया है| भूमंडलीकरण के दौर में बाजारवाद की त्रासदी का सबसे पहले पर्यावरण शिकार बना| इक्कीसवीं सदी के आरम्भ में ही पर्यावरण संकट दिखाई देने लगा| 'पानी की प्रार्थना' इस कविता में केदारनाथ सिंह ने इस भीषण संकट की ओर इशारा किया है- "अब देखिये न, लम्बे समय के बाद,

कल मेरे तट पर एक चील आई,
प्रभू कितनी कम चीले दिखती है आजकल|
आपको तो पता होगा कहाँ गयी वे?
पर जैसे भी हो एक वह आई,
जाने कहाँ से भटक कर, और बैठ गई मेरे बाजू में,
उसने चौक कर पहले इधर उधर देखा|
फिर अपनी लम्बी चोंच गडा दी मेरे सीने में|

अत: प्रकृति से प्रेम होना मनुष्य के लिए नयी बात नहीं है, और इसी पर्यावरण प्रेम की वजह से ही साहित्य में प्रकृति प्रेम का महत्वपूर्ण स्थान रहा है| लेकिन धीरे धीरे मनुष्य ने पेड़, नदी, पर्बत, पहाड़, जंगल आदियों पर अपना अधिकार बना लिया और मानो इनको लुटने की तैयारी में वह लग गया है| आज इस पर्यावरण के संवर्धन की जिम्मेदारी हम सब की है, नहीं तो सृष्टि का विनाश होते देर नहीं लगेंगी| प्रकृति से अलगाव मनुष्य के स्वार्थी होने की निशानी है| कवि मंगेश डबराल की कविता वास्तव का चित्रण करती हुई दिखाई देती है-

हमें याद है, यहाँ थी वह नदी इसी रेत में,
जहाँ हमारे चेहरे हिलते थे
यहाँ थी वह नाव इंतजार करती हुई,
अब वहाँ कुछ नहीं है,
सिर्फ रात को जब लोग नींद में होते है,
कभी कभी एक आवाज सुनाई देती है रेत से|

सन्दर्भ-

1) पदावली- विद्यापति
2) रामचरितमानस- तुलसीदास
3) बिहारी प्रकाश- बिहारी
4) पंचवटी- मैथिलीशरण गुप्त उदृत 'कविताकोश' वेब पेज से
5) 'अकाल और उसके बाद'- नागार्जुन उदृत 'कविताकोश' वेब पेज से
6) कामायनी- जयशंकर प्रसाद, चिंता सर्ग
7) यहाँ थी वह नदी- मंगेश डबराल, उदृत 'कविताकोश' वेब पेज से

Scanned with OKEN Scanner